रागों की समानता और भिन्नता

पिछले आलेख में हमने कुछ रागों में समानता एवं भेद देखा| अब तक मुख्य रूप से रिषभ एवं धैवत कोमल तथा तीव्र मध्यम या दोनों मध्यम वाले राग हमने साम्य और भेद के संदर्भ में विचारार्थ लिए थे| अब हम अन्य रागों की समानता और भिन्नता देखेंगे| मल्हार-बहार, मल्हार -दरबारी, मिया मल्हार-गौड़ मल्हार, दरबारी अडाना, अडाना-बहार ऐसी अन्य भी जोड़ियाँ हम देखेंगे|

सर्व प्रथम मल्हार और बहार इन दो रागों के बीच कि समानता और भिन्नता पर गौर करें| दोनों राग काफी थाट से उत्पन्न राग हैं| दोनों रागों में दो नो निषाद लगते हैं और गंधार कोमल है| दोनों राग मौसमी राग हैं, वैसे अन्य ऋतुओं में दोनों रात्रि गेय राग माने गए हैं| वादी संवादी कि दृष्टि से भेद है| मल्हार में पंचम वादी है और बहार में मध्यम वादी है दोनों में संवादी षड्ज है| किन्तु दोनों रागों के स्वभाव बहुत अलग हैं, मल्हार गम्भीर राग है जबकि बहार चंचल राग है| मल्हार में दोनों निषादों का एक के बाद एक इस प्रकार लगातार प्रयोग होता है--यह राग नियमों का अपवाद है| इसी प्रकार से ललित राग में दोनों मध्यम एक के बाद एक इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं| यहाँ यह जानना जरूरी है कि इस प्रकार के अपवाद कम होते हैं| मल्हार में सा मरे प इस प्रकार का चलन होता है, बहार में सा म प ग म ऐसे गाया जाता है| तार सप्तक की ओर बढते समय मल्हार में प नी [कोमल] धनी [शुद्ध] सा इस प्रकार से स्वरावली प्रयुक्त होती है| बहार में ध नी सा इस प्रकार लिया जाता है, इस में कुछ विद्वान शुद्ध नी और कुछ कोमल नी का प्रयोग ठीक मानते है| किन्तु दोनों स्थितियों में केवल एक ही निषाद आता है| मल्हार में सा साध निम प आता है तो बहार में ध नि सां नी [कोमल] प इस प्रकार गाते हैं| मल्हार का निषाद खास ढंग से आन्दोलित रहता है, जैसे निध निध [दोनों बार कोमल नी] फिर नी [शुद्ध]सा| बहार में बागेश्री के समान धनिसा निप इस तरह गाते हैं| तानों में सासामरेपपमगममरेसा |

एक और अंतर भी बताया जा सकता है, वह यह कि आरोह में सीधे ध नी सा इस प्रकार से मल्हार में नही जाया जाता| बहार में ध नी सा ऐसे गाते हैं| मल्हार में वर्षा ऋतु ,दादुर,मोर,पपीहे की पुकार और प्रिया का या पति का पास न होना ये बातें बन्दिशों में प्राय:वर्णित होती हैं|बहार राग के नाम से ही ज्ञात होता है कि उसमें बसंत ऋतु,बन में फूले हुए फूल, वन में छाई बहार का वर्णन होगा और यही सब इस राग कि बंदिशों में देख पडता है| अर्थात यह राग आनंद का परिचायक है| वैसे कहीं कहीं प्रिय नहीं आए, सौतन के घर रह गाये होंगे ऐसे भाव भी वर्णित होते हैं, किन्तु आम पर बौर छाना, बेलें और पेडों पर बहार आ जाना, सब ओर हरियाली के छा जाने से प्रकृति का भी मुदित होना ऐसे वर्णन अधिकतर होते हैं| मल्हार में विरहिणी की व्यथा अधिक पाई जाती है|

अब देखें कि दरबारी और मल्हार में क्या साम्य-भेद पाए जाते हैं| दरबारी मल्हार के समान मौसमी राग नही है, वह रात्रि गेय राग है| दोनों राग भिन्न थाटों से उत्पन्न होते हैं| दरबारी का थाट आसावरी है और मल्हार का थाट काही है| दरबारी में ग,ध,नी कोमल लगते हैं ,जबकि मल्हार में ग कोमल है ,दोनों निषाद लगाये जाते हैं और धैवत शुध्ह है| मुख्य भेद यह है कि दरबारी के गंधार और धैवत कोमल तो हैं किन्तु कुछ उतरे होते हैं, जबकि मल्हार का गंधार मध्यम का कण लेकर गा या जाता है अत:कुछ चढ़ाहोता है| दोनों राग रात्रि गे हैं,और वर्षा ऋतु को छोड़ कर अन्य ऋतुओं में मल्हार रात्रि में ही गाते हैं| दरबारी में आरोह वक्र सम्पूर्ण है जबकि मल्हार में सा रे प, म प नी[कोमल] धनी सा इस प्रकार का चलन रहता है, इसे वक्र

सम्पूर्ण आरोह माना जाता है| दरबारी का अवरोह वक्र सम्पूर्ण मानते हैं| मल्हार के अवरोह में धैवत न होने से उसकि जाति सम्पूर्ण षाडव कही जाती है| इस प्रकार से दरबारी का आरोह एवं अवरोह दोनों वक्र सम्पूर्ण हैं और मल्हार के सम्पूर्ण औडव| मल्हार में आरोह और अवरोह दोनों में दोनों निषाद होने से इसकी अलग पहचान बन जाती है|

मिया मल्हार और गौड़ मलार में पर्याप्त भेद है| उसमें गंधार कोमल न होने से मिया मल्हारसे उसमे काफी अंतर प्रतीत होता है| दोनों निषाद अधिकतर आरोह में लगाना यह गौड़ मल्हार कि विशेषता है| हाँ,यह अवश्य कहना होगा कि म रे प, नी[कोमल] ध नी [शुद्ध] सा ऐसे स्वर समूह के कारण इसमें मिया मल्हार का आभास अवश्य पैदा होता है,किन्तु गंधार शुद्ध होने से वह निरस्त भी हो जाता है| मध्यम वादी होने से उसपर बार बार न्यास होने से दोनों रागों में अंतर स्पष्ट हो जाता है; क्यों कि मिया मल्हार में पंचम वादी होने से उसकी प्रबलता रहती है| साथ ही गौड़ मल्हार मिया मल्हार की अपेक्षा चंचल है, जबकि मिया मल्हार पर्याप्त रूप से गम्भीर राग है|

अडाना और बहार ऐसे ही निकटवर्ती राग हैं| दोनों उत्तरांग प्रधान हैं| अत:दोनों में लयकारी,तानें अधिक होना स्वाभाविक ही है| प्राय:दरबारी में विलम्बित ख्याल गाकर गायक अडाना में छोटा ख्याल गाना पसंद करते हैं| इसी प्रकार कोई विलम्बित ख्याल गम्भीरतापूर्वक गाने के बाद छोटे ख्याल के लिए बहार राग को चुना जाता है| वैसे दोनों रागों में कुछ भेद भी हैं, जैसे कि अडाना का थाट आसावरी है और बहार का काफी जैसा कि पहले कहा ज चुका है| अडाना के वादी-सम्वादी तार सा और पंचम हैं, बहार के मध्यम-षड्ज अडाना की जाति षाडव [वक्र] सम्पूर्ण है, बहार कीषाडव-षाडव है| बहार मौसमी राग है और अडाना वैसा नहीं है| बसंत ऋतु के आलावा बहार अडाना के समान रात्रि में गाया जाता है| अडाना और बहार दोनों में गंधार कोमल है, किन्तु अडाना में केवल कोमल गंधार लगता है यद्यपि वह आरोह में कुछ चढा रहता है| बहार में दोनों निषाद लगते हैं| वैसे दोनों राग चंचल प्रकृति वाले और उत्तरांग प्रधान हैं| दरबारी के समान अडाना की तानों में सारंग अंग की प्रधानता रहती है|

आज का आलेख यहीं समाप्त करते हैं| अगले भाग में पुन:मिलेंगे|

नव वर्ष की सभी रसिक पाठकों को राशि राशि शुभ कामनाएँ|